पाठ 9. विद्यादान

पाठ का परिचय

ईश्वरचंद्र विद्यासागर बाल्यकाल से ही बुद्धिमान थे। बड़े-बड़े विद्वान उनकी बुद्धि का लोहा मानते थे। ईश्वरचंद्र विद्या के सागर तो थे ही, वे दया के भी सागर थे। एक समय एक भिखारी बालक जब उनसे भीख माँगने आया तो उन्होंने उसे एक रुपया देकर यह सलाह दी कि वह कुछ काम करे और भीख न माँगे। कई वर्ष बाद सचमुच वह युवक सम्मानपूर्वक ज़िंदगी जीते हुए देखा गया। विद्यासागर का एक स्वप्न था कि अपने देश की लड़कियाँ दूसरे देश की लड़कियों से पीछे न रहें। उस समय भारतीय नारी की दुर्दशा हो रही थी। अनेक कष्टों का सामना करके विद्यासागर ने लड़कियों के लिए विद्यालय खुलवाए। लड़कियों के जीवन को अंधविश्वास की अँधेरी कोठरियों से बाहर निकाला। बाल-विवाह के प्रचलन को रोकने के लिए उन्होंने प्रयास किए। आज उनके द्वारा दिखाए रास्ते पर चलकर हमारे देश की लड़कियाँ अपने भविष्य को उज्ज्वल बना रही हैं।

पाठ में निहित जीवन-मूल्य

विद्या प्राप्त करने से जीवन गौरवमय तथा उन्नत बनता है। उसी विद्या को बाँटने से जीवन और भी अधिक श्रेष्ठ बन जाता है। सभी के प्रति दया का भाव रखना जीवन व विचारों को सुंदर बनाता है।

पाठ का वाचन

अध्यापक/अध्यापिका बच्चों से एक-एक अनुच्छेद पढ़वाएँ। उच्चारण की शुद्धता पर ध्यान दें। कठिन शब्दों के अर्थ बताएँ। आवश्यक पंक्तियों का आशय स्पष्ट करें। ईश्वरचंद्र के जीवन पर बीच-बीच में प्रकाश डालें। विद्यादान की श्रेष्ठता बताकर उसे पाने व उसे बाँटने की विशिष्टता बताएँ।

महत्वपूर्ण चर्चा

निम्नलिखित प्रश्नों पर आधारित चर्चा कक्षा में करें –

- विद्या प्राप्त करना क्यों ज़रूरी है?
- विद्या प्राप्त करने से क्या होता है?
- विद्यादान करने वाले को श्रेष्ठ क्यों कहा गया है?
- तुम अपने अध्यापक/अध्यापिका को कितना सम्मान देते हो?
- विद्या बाँटने से कम क्यों नहीं होती?
- यदि प्रत्येक व्यक्ति एक अशिक्षित को शिक्षित करने का प्रण कर ले तो क्या होगा?